फरवरी 2024 वर्ष 3, अंक 2

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

“ स्वंय में सुधार करना पूरी दुनिया को सुधारने के समान है। सूर्य तो अत्यन्त चमकीला है। यह किसी का सुधार नहीं करता है। चूँकि सूर्य चमकता है, इसलिए सारा संसार प्रकाश से भर जाता है। अपने आप को बदलना (**Transform** करना) पूरी दुनिया को रोशनी प्रदान करने का एक साधन है।”

– रमण महर्षि

विषय–सूची

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. – ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा) 7

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AAADEIs & AAFDEI) 11

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय-सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई. के 42वें दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन....3
2. डी.ई.आई. में उत्साहजनक समारोह के साथ 75वें गणतंत्र दिवस का आयोजन....4
3. डी.ई.आई. ने धूमधाम से मनाया संस्थापक दिवस....4
4. इंटर यूनिवर्सिटी सेंट्रल जोन यूथ फेस्टिवल 2024 में डी.ई.आई. का विजयोल्लास....5
5. डी.ई.आई.,यू एच वी सेल के तहत कार्यशाला का आयोजन....5
संकाय समाचार....6
6. विज्ञान विभाग....6
शिक्षकोपलब्धि....6
7. डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय इंटरमीडिएट स्कूल....6
छात्रोप्लब्धियाँ....6

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

8. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से....7
9. सूचना केन्द्रों से समाचार....8
प्रकृति बनाम पोषण पर कार्यशाला सह–विचार–मंथन सत्र दिल्ली के स्वामी नगर में आयोजित किया गया....8
डी.ई.आई. एलोरा केंद्र, आगरा ने 'बैस्ट आउट ऑफ वेस्ट प्रतियोगिता' का आयोजन किया....8
डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का बीसवार्षिक समारोह आयोजित....8
जालंधर और मुरार केंद्रों में गणतंत्र दिवस समारोह....9
डी.ई.आई. केंद्रों में संस्थापक दिवस समारोह: एक विहंगम दृश्य....9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

10. संपादक की डेस्क से....11
11. परम अंत में आनंद – बसंत....11
सीमा स्वामी प्यारी संधीर
12. बसंत....12
प्रिया सिंह
13. पूर्व छात्र बाइट्स....13
''दयालबाग़ में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है...''
प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड....14

खंड क : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. के 42वें दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन

20 जनवरी, 2024 को दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 के 42 वें दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन किया गया। परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस.सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति के साथ इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। दीक्षांत समारोह में परम आदरणीय रानी साहिबा की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर श्री के. संजय मूर्ति, आई.ए.एस., सचिव, शिक्षा मंत्रालय, उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार मुख्य अतिथि थे। हालाँकि वह कार्यक्रम के दौरान शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हो सके, फिर भी उन्होंने अपना रिकॉर्ड किया हुआ दीक्षांत भाषण भेजा, जिसे सभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। श्री मूर्ति ने नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित सुधारों को लागू करने में डी.ई.आई. के अग्रणी रहने की सराहना करते हुए, संयुक्त राष्ट्र के सभी सत्रह सतत् विकास लक्ष्यों में योगदान देने के लिए संस्थान को बधाई दी। इस समारोह के दौरान उन्हें सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भी प्रदान किया गया।

दीक्षांत समारोह का आरम्भ भव्य प्रबुद्ध मण्डल के 'शिक्षा स्रोत भवन' (दीक्षांत समारोह हॉल) में आगमन के उपरान्त हुआ जब सदस्यों ने अपना–अपना स्थान ले लिया। संस्थान की प्रार्थना के बाद, डी.ई.आई. के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन ने डी.ई.आई. के अध्यक्ष श्री जी.एस. सूद से अनुमति मांगी और दीक्षांत समारोह के उद्घाटन की घोषणा की। इसके बाद, कार्यवाहक निदेशक ने अपने पूर्ववर्ती प्रोफेसर पी. के. कालरा, जो अब संस्थान के वरिष्ठ निदेशक हैं, के कार्यकाल में हुई अधिकांश उल्लेखनीय प्रगति को स्वीकार करते हुए अपनी वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने 'प्रासंगिकता के साथ उत्कृष्टता' मंत्र के आधार पर डी.ई.आई. की उल्लेखनीय उपलब्धियों का अवलोकन साझा किया। आधुनिक सतत् स्वास्थ्य देखभाल आवास के रूप में दयालबाग़ के विकास में डी.ई.आई. के योगदान पर जोर देते हुए, प्रोफेसर पटवर्धन ने संस्थान द्वारा शुरू किए गए कई परिवर्तनकारी मिशनों के बारे में भी उल्लेख किया, जैसे कि यमुना नदी को पुनर्जीवित करने का मिशन, ऊंट–पालन पहल, समग्र शैक्षिक प्रगति जैसे नॉलेज फॉर चेंज (K4C) हब की स्थापना, स्प्रिंगर नेचर की मदद से रिसर्च समिट का आयोजन आदि। इसके बाद विभिन्न डिग्रियां, पदक और पुरस्कार प्रदान किए गए और निदेशक द्वारा स्क्रोल ऑफ ऑनर पर हस्ताक्षर किए गए। इस वर्ष 4829 विद्यार्थियों ने डी.ई.आई. के विभिन्न पाठ्यक्रमों में डिग्री एवं डिप्लोमा प्राप्त किये। 01 फाउन्डर्स मेडल, 149 डायरेक्टर्स मेडल, 03 प्रेसीडेण्ट्स मेडल और 90 पी एच.डी. धारकों को सम्मानित किया गया। छात्रों के बीच 2829 स्नातक डिग्री, 726 स्नातकोत्तर डिग्री, 64 स्नातकोत्तर डिप्लोमा, इंजीनियरिंग और पॉलिटेक्निक में 559 डिप्लोमा, 238 हाईस्कूल और 318 इंटरमीडिएट प्रमाणपत्र वितरित किए गए। सभी स्नातक परीक्षाओं, 2023 में उच्चतम ग्रेड अंक हासिल करने के लिए, अदिति राठौड़ और अमन प्रताप सिंह को प्रेसीडेण्ट मेडल से सम्मानित किया गया, जबकि सभी स्नातकोत्तर परीक्षाओं, 2023 में उच्चतम ग्रेड अंक हासिल करने के लिए, तनु कौर को यह प्रतिष्ठित पदक मिला। दृष्टि गोयल को वर्ष 2023 में स्नातक होने वाले संस्थान के प्रथम–डिग्री छात्रों में से सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंडर छात्र होने के लिए सबसे प्रतिष्ठित फाउन्डर्स मेडल प्राप्त हुआ। समारोह के दौरान, छह प्रतिष्ठित व्यक्तिओं, (श्री गुर सरूप सूद, प्रोफेसर सी. पटवर्धन, प्रोफेसर साहब दास, प्रोफेसर स्वामी सरन श्रीवास्तव, डॉ. सरूप रानी माथुर ओर एयर कमोडोर अमित त्यागी) को वर्ष 2023 के लिए 'Distinguished एल्युमनाई अवार्ड' प्रदान किया गया।

डी.ई.आई. में उत्साहजनक समारोह के साथ 75वें गणतंत्र दिवस का आयोजन

देशभक्ति और एकता के शानदार प्रदर्शन के साथ दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 ने अपना 75वां गणतंत्र दिवस उत्साह और गरिमा के साथ मनाया। डॉ. सुनील कुमार गुलाटी, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), पूर्व विशेष मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार, ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई और अपने संबोधन में अपनी शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को शामिल करने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता की सराहना की। मुख्य आकर्षण एक जोशपूर्ण मार्चपास्ट प्रतियोगिता थी, जिसमें छात्रों के अनुशासन और उत्साह का प्रदर्शन किया गया और ऑनररी मेजर प्रीतम सिंह और सूबेदार मेजर ए. प्रकाश राव ने इसका मूल्यांकन किया। प्रेम विद्यालय गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज की छात्राएँ और टेक्निकल कॉलेज और डी.ई.आई. बैंड के छात्र विजेता बने, उनकी सराहना की गई और उन्हें विजेता शील्ड प्रदान की गई। सराहनीय प्रदर्शन के लिए डी.ई.आई. नर्सरी–कम–प्ले सेंटर, डी.ई.आई. डेयरी बाग प्राइमरी स्कूल, रा धा/धः स्व आ मी सरन आश्रम नगर स्कूल और डी.ई.आई. पी.वी. प्राइमरी स्कूल की टीमों को विशेष पुरस्कार दिए गए। राष्ट्र के लिए गौरव की भावना को दर्शाते हुए इस दिवस को एक मधुर समूह गीत द्वारा और भी यादगार बनाया गया। संस्थान के कार्यवाहक निदेशक प्रो. सी. पटवर्धन, कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन, कोषाध्यक्ष श्रीमती स्नेह बिजलानी सहित उल्लेखनीय उपस्थित श्रोता गण, सम्मानित संकाय, छात्रों और कर्मचारियों की एक बड़ी सभा इस उत्सव की साक्षी बनी, जिसने भविष्य के नागरिकों को आकार देने में एकता के लोकाचार और मूल्य–आधारित शिक्षा के महत्त्व को मजबूत किया। समारोह के अंत में उत्सव के रूप में सभी को मिठाइयाँ वितरित की गईं।

डी.ई.आई. ने धूमधाम से मनाया संस्थापक दिवस

डी.ई.आई. ने 31 जनवरी, 2024 को अद्वितीय उत्साह, जोश और उत्साह के साथ अपना संस्थापक दिवस मनाया। यह दिन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह डी.ई.आई. के संस्थापक निदेशक, परम श्रद्धेय डॉ. एम.बी. लाल साहब की शुभ जन्म तिथि को चिह्नित करता है। संस्थापक दिवस समारोह, जिसे 'ओपन डे' के रूप में भी जाना जाता है, में डी.ई.आई. के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई उपलब्धियों और उपक्रमों का शानदार प्रदर्शन देखा गया। पूरा परिसर गतिविधियों, प्रदर्शनों और रंग–बिरंगी सजावटों से जीवंत हो उठा, जिससे खुशी और उत्सव का माहौल बन गया। इस कार्यक्रम में डी.ई.आई. के छात्रों के समर्पण और कड़ी मेहनत का प्रदर्शन किया गया, जिन्होंने ग्राफिकल चार्ट, वर्किंग मॉडल, डिस्प्ले बोर्ड और इंटरैक्टिव गतिविधियों जैसे विभिन्न माध्यमों के द्वारा अपनी अभिनव परियोजनाओं और रचनात्मक कार्यों को प्रस्तुत किया। व्यवस्था की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी, जिससे आगंतुक अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में नए उपक्रम और उच्च प्रदर्शन से अवगत हो सकें। सिरेमिक और पॉटरी, कृषि प्रौद्योगिकी, ग्रीनहाउस प्रौद्योगिकी, सतत् विकास लक्ष्य, पेटेंट, अनुसंधान, डेयरी प्रौद्योगिकी,

3–डी प्रिंटिंग, नैनो और क्वांटम विज्ञान, चेतना सहित विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मॉडल और गतिविधियों का प्रदर्शन करते हुए कुल 41 स्टॉल लगाए गए थे। अध्ययन, ड्रोन, आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (ए जी आई), ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, चमड़ा प्रौद्योगिकी, अनुपम उपवन, उन्नत भारत अभियान, पूर्व छात्र प्लेसमेंट, चिकित्सा शिविर, डी.ई.आई. शिक्षा नीति, डी.ई.आई. का इतिहास, प्रवेश प्रक्रिया और परीक्षा, आदि। परिसर में *भक्ति संगीत* ने इस गरिमामय कार्यक्रम में आध्यात्मिक वातावरण निर्मित किया।

शिक्षा सलाहकार समिति (Advisory Committee on Education–दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक थिंक टैंक के रूप में सेवारत एक गैर–सांविधिक निकाय) की एक बैठक विशेष रूप से परम श्रद्धेय डॉ. एम.बी. लाल साहब के चरण में हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए बुलाई गई थी, जिसमें डी.ई.आई. में उच्च शिक्षा कार्यक्रम की अगुवाई में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया गया था। बैठक ने समग्र शैक्षिक कार्यक्रमों और प्रथाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त असाधारण प्रगति को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया, जो सभी शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष परम श्रद्धेय प्रोफेसर पी.एस. सतसंगी साहब के दिव्य मार्गदर्शन में संपन्न हुए हैं और दयालबाग़ में मुख्यालय वाले रा धा/धः स्व आ मी मत के आठवें प्रशंसित वक़्त संत सतगुरु, आगरा–282005 संस्थापक दिवस समारोह डी.ई.आई. की अपनी शानदार विरासत का सम्मान करने और आध्यात्मिक गुरुओं के उदार मार्गदर्शन में समग्र शिक्षा के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए गहरी प्रतिबद्धता का उदाहरण देता है। यह केवल एक उत्सव नहीं है; यह उत्कृष्टता, नवाचार और अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता का एक वसीयतनामा है। यह आयोजन छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने, एक दूसरे से सीखने और संस्थान के समग्र विकास और प्रगति में योगदान करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

इंटर यूनिवर्सिटी सेंट्रल जोन यूथ फेस्टिवल 2024 में डी.ई.आई. का विजयोल्लास

स्वामी विवेकानन्द सुभारती यूनिवर्सिटी, मेरठ में 30 जनवरी से 3 फरवरी, 2024 तक आयोजित 37वें इंटर यूनिवर्सिटी सेंट्रल जोन यूथ फेस्टिवल 2024, 'सुभारती उत्सव' में पूरे क्षेत्र के 21 विश्वविद्यालयों की प्रतिभा, संस्कृति और सौहार्द का शानदार समन्वय देखा गया। 45 सदस्यों का डी.ई.आई. समूह, जिसमें स्टाफ सदस्य, छात्र और संगतकार (accompanists) शामिल थे, सांस्कृतिक विविधता और कलात्मक उत्कृष्टता के इस जीवंत प्रदर्शन में भाग लेने पर गर्व महसूस कर रहे थे। संस्थान ने नृत्य, संगीत, साहित्यिक कार्यक्रम और ललित कला सहित कई श्रेणियों में प्रतिस्पर्धा की। प्रत्येक प्रदर्शन छात्रों के समर्पण और प्रतिभा का प्रमाण था। टीम की कड़ी मेहनत और प्रतिभा को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें शामिल हैं:

- समूह गीत वेस्टर्न – प्रथम स्थान
- मेहंदी – दूसरा स्थान
- स्पॉट फोटोग्राफी – तीसरा सीन
- समूह गान इंडियन– पांचवां स्थान
- वेस्टर्न इंस्ट्रुमेंटल सोलो– पांचवां स्थान
- वेस्टर्न सोलो –पांचवां स्थान
- भाषण– चतुर्थ स्थान
- वाद–विवाद– पांचवां सीन

हमारे संस्थान के शीर्ष तीन विजेता मार्च 2024 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में होने वाले प्रतिष्ठित राष्ट्रीय युवा महोत्सव में विभिन्न क्षेत्रों के अपने समकक्षों को चुनौती देने के लिए तैयार हैं।

डी.ई.आई.,यू एच वी सेल के तहत कार्यशाला का आयोजन

यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज़ सेल, डी.ई.आई. और संस्थान के मनोविज्ञान विभाग ने 11 जनवरी, 2024 को 'एन्हान्सिंग (enhancing) काउन्सलिंग स्किल्स अमंग फैकल्टी' नामक एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती माला श्रीवास्तव, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) द्वारा विश्वविद्यालय प्रार्थना और उद्घाटन टिप्पणियों के साथ किया गया। उन्होंने डी.ई.आई. में एच आर डी कोशिकाओं के महत्त्व पर जोर दिया। यू एच वी सेल के समन्वयक प्रो. के. शांति स्वरूप ने इन कोशिकाओं द्वारा की गई गतिविधियों की रूपरेखा तैयार की, जिसका उद्देश्य प्रथम वर्ष की महिला छात्रों को रुचि, क्षमताओं और योग्यता के आधार पर पाठ्यक्रम चयन में सहायता करना है। मनोविज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. संजय सिंह ने परामर्श उपकरणों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का समापन एच आर डी कोशिकाओं की दृश्यता बढ़ाने, परामर्श रिकॉर्ड बनाए रखने और परामर्श अवधि को संकाय कार्यक्रम में शामिल करने की योजनाओं के साथ हुआ। भविष्य की उपक्रम में अभिविन्यास सत्र, कौशल वृद्धि के लिए कार्यशालाओं और प्रगति पर नियमित अपडेट शामिल हैं। बैठक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुई, जो डी.ई.आई. में संकाय परामर्श कौशल में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संकाय समाचार

विज्ञान विभाग

भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग में किए जा रहे अनुसंधान परियोजना "Aspects of Chern-Simons Theories"को सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग और विज्ञान और अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड भारत की वार्षिक रिपोर्ट में एक शोध हाइलाइट के रूप में चुना गया था। परियोजना समीक्षा समिति द्वारा ''उत्कृष्ट'' के रूप में मूल्यांकन किए जाने के बाद, का (डी एस टी–एस ई आर बी, 2022–2023, पृष्ठः 74–75)। यह परियोजना d=2+1 (दो स्थानिक आयाम प्लस समय) में क्वांटम फील्ड थ्योरी के अध्ययन पर केंद्रित है, जो सामग्री विज्ञान से लेकर क्वांटम गणना तक के संभावित अनुप्रयोगों के साथ अंतःविषय अनुसंधान की एक सीमा है।

शिक्षकोपलब्धिः

डी.ई.आई. के भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. सोनाली भटनागर ने जी एल ए विश्वविद्यालय, मथुरा द्वारा 02 से 04 फरवरी, 2024 तक आयोजित भौतिक विज्ञान के कोर और फ्रंटियर में प्रगति पर तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में "Geant4 based studies of Dayalbagh Educational Air Shower Array (DEASA)" शीर्षक से मुख्य व्याख्यान दिया।.

डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय इंटरमीडिएट स्कूल

छात्रोपलब्धिः

बारहवीं कक्षा की छात्रा सुश्री छवि भंडारी ने अपने पोस्टर के लिए 'सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार' जीता, जिसका शीर्षक था, 'Viewing the Transportation of Human Consciousness from Microcosm to Macrocosm through the Lens of Indian Knowledge System with a Special Focus on the Impact of Nature and Nurture on Human Consciousness'। दयालबाग़ में चेतना का विज्ञान, शीतकालीन सत्र 2024, 31 दिसंबर, 2023 और 01 जनवरी, 2024 को डी.ई.आई. में आयोजित किया गया। उन्होंने 'Viewing Sustainable Development and the Indian Knowledge System through the Lens of Dayalbagh Way of Life and Sant Su(perman) Evolutionary Scheme with a Special Focus on Sigma 6 QVA (Qualities, Values, Attributes)' शीर्षक से एक पेपर भी प्रस्तुत किया 4 से 6 जनवरी School of Humanities &Social Sciences, Sharda University, Greater Noida द्वारा आयोजित 'Indian Knowledge System for Sustainable Development in the Contemporary World' सम्मेलन में 'सर्वश्रेष्ठ पेपर पुरस्कार' जीता।

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का पैरा 4.36 इस प्रकार है:

बोर्ड परीक्षा और प्रवेश परीक्षा सहित माध्यमिक विद्यालय परीक्षाओं की वर्तमान प्रकृति – और परिणामस्वरूप आज की कोचिंग संस्कृति – विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालय स्तर पर बहुत नुकसान कर रही है। इनके चलते विद्यार्थी अपना कीमती समय सार्थक अधिगम की बजाए परीक्षाओं की तैयारी और अत्यधिक परीक्षा कोचिंग करने में खर्च कर रहे हैं। ये परीक्षाएं विद्यार्थियों को चुनाव के विकल्पों में एक लचीलापन – जो कि भविष्य की व्यक्ति–केन्द्रित शिक्षा प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण होगा – देने के बजाय उन्हें किसी ख़ास स्ट्रीम में बहुत संकुचित दायरे में ही तैयारी करने के लिए मजबूर करती हैं।

कोचिंग संस्कृति से होने वाले नुकसान को कम करने के प्रयास में, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने जनवरी 2024 में कोचिंग सेंटर के नियमों के लिए दिशानिर्देश जारी किए [1]।

भारत में कोचिंग संस्कृति के विकास पर 'द टेमिंग ऑफ द ट्यूटर्स' शीर्षक वाले लेख [2] में विचार किया गया है। इसके लेखक के अनुसार, छात्रों की पिछली पीढ़ी भाग्यशाली थी कि उन्हें शुद्ध शिक्षा प्राप्त हुई जो 'सीखने न कि प्रतिस्पर्धा' पर आधारित थी। 1970 के दशक के अंत तक, निजी ट्यूशन एक अज्ञात शब्द था। कृषि में रुचि कम होने के साथ, शिक्षण का पेशा भीड़भाड़ वाला हो गया – नौकरी पाने में असमर्थ शिक्षित युवाओं ने समानांतर शिक्षा प्रणाली और शिक्षा के व्यावसायीकरण को चुना, जिसमें शिक्षार्थियों को ट्यूटर्स द्वारा भारी अंकों का लालच दिया जाता था, जब तक कि यह आदर्श नहीं बन गया।

प्रणाली बहुत जटिल हो गई है और माता–पिता को अपने बच्चों को यह समझाना मुश्किल हो रहा है कि वे स्व–अध्ययन के माध्यम से अपना करियर बना सकते हैं। एक बार जब युवा कोचिंग कक्षाओं में शामिल हो जाते हैं, तो उन्हें प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है और नींद की कमी से पीड़ित होते हैं।

विनियमों में, यह बताया गया है कि कई राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों ने अपने अधिकार क्षेत्र में निजी कोचिंग और ट्यूशन कक्षाओं को विनियमित करने के लिए उचित कानूनी ढांचे के माध्यम से पहले ही पहल कर दी है। हालाँकि, निजी कोचिंग केंद्रों से संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए एक मॉडल दिशानिर्देश तैयार करने की आवश्यकता है।

विनियम कोचिंग को इस प्रकार परिभाषित करते हैं: 'कोचिंग का अर्थ है 50 से अधिक छात्रों को दी जाने वाली शिक्षा की किसी भी शाखा में ट्यूशन, निर्देश या मार्गदर्शन, लेकिन इसमें परामर्श, खेल, नृत्य, थिएटर और अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ शामिल नहीं हैं।'

विनियमों के अनुसार उचित दस्तावेज के साथ केंद्रों का पंजीकरण और प्रवेश की न्यूनतम आयु 16 वर्ष होनी आवश्यक है। वे यह भी निर्दिष्ट करते हैं कि कक्षाएं स्कूल के घंटों के दौरान आयोजित नहीं की जानी चाहिए और उन्हें सुबह जल्दी या देर शाम को आयोजित नहीं किया जाना चाहिए, और कुल अध्ययन का समय पांच घंटे से अधिक नहीं होना चाहिए। इनके अलावा, केंद्रों को छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए।

मेट्री [2] ने विचार व्यक्त किया है कि सरकार द्वारा प्रख्यापित विनियम सीखने को आनंददायक और सार्थक बना देंगे। सरकार स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि समाज ने कोचिंग संस्कृति को स्वीकार कर लिया है, और सरकार अपने कामकाज का मानकीकरण करना चाहती है।

20 जनवरी, 2024 के टाइम्स ऑफ इंडिया के संपादकीय में कहा गया है कि यह बहुत आशावादी नहीं लगता है और महसूस करता है कि बहुत अधिक परीक्षाओं के कारण बहुत अधिक कोचिंग हो गई है और दिशानिर्देशों को एक band-aid के रूप में देखता है। हालाँकि, यह उल्लेखनीय है कि दिशानिर्देश बताते हैं कि यूजी/पीजी के लिए कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (सी यू ई टी) जैसे परीक्षणों के बोझ को कम करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं।

अंत में, यह बताना उचित है कि दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थानों के पूर्व छात्र संघ (AADEIs) और डी.ई.आई. के आई सी टी सतत्

शिक्षा केंद्र हमारे छात्रों को सिविल सेवाओं, सशस्त्र बलों में करियर के लिए नियमित कक्षाओं/कार्यशालाओं आदि के माध्यम से प्रतिस्पर्धा की तैयारी में सहायता करते हैं।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

संदर्भः

[1] https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Guideliens_Coaching_Centres_en.pdf

[2] D.M. Metri, University News, Feb 05-11, 2024

सूचना केंद्रों से समाचार

प्रकृति बनाम पोषण पर कार्यशाला सह-विचार-मंथन सत्र दिल्ली के स्वामी नगर में आयोजित किया गया

दिल्ली के डी.ई.आई. स्वामी नगर आई सी टी केंद्र में 7 जनवरी, 2024 को 'प्रकृति बनाम पोषण' पर एक कार्यशाला सह विचार–मंथन सत्र का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वर्चुअल और फिज़िकल मोड में लगभग 100 लोग शामिल हुए। कार्यशाला केंद्र से जुड़े कर्मचारियों, छात्रों और शिक्षाविदों और सतसंग शाखा, स्वामी नगर, नई दिल्ली के सदस्यों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यक्रम का आयोजन स्वामी नगर मॉडल स्कूल परिसर में किया गया। मुख्य वक्ताओं और अन्य प्रतिभागियों के साथ नौ छात्र कार्यशाला में शामिल हुए। सामुदायिक सेवा, कृषि पारिस्थितिकी, शिक्षाविद, नीति निर्माण, प्रशासन आदि जैसे विभिन्न आयामों से विषय पर अपने विचार साझा करने के लिए वक्ताओं के एक पैनल को आमंत्रित किया गया था। अंत में, विभिन्न विषयों पर प्रतिभागियों के विचार जानने के लिए एक प्रश्नावली भी प्रसारित की गई थी।

डी.ई.आई. एलोरा केंद्र, आगरा ने 'बैस्ट आउट ऑफ वेस्ट प्रतियोगिता' का आयोजन किया

''वेस्ट नथिंग'' के संदेश को बढ़ावा देने और फैलाने के लिए, डी.ई.आई. सूचना केंद्र, एलोरा, आगरा ने 19 जनवरी, 2024 को एक अनूठी 'बैस्ट आउट ऑफ वेस्ट प्रतियोगिता' का आयोजन किया, ड्राइंग इसके छात्रों, विशेषकर बी.बी.ए. और बी.कॉम कार्यक्रमों के छात्रों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। छात्रों ने घरेलू सजावट के सामान, रोजमर्रा की रसोई और कृषि उपकरण और दैनिक उपयोग के अन्य सामान जैसे विविध प्रकार के लेख बनाए। इस आयोजन ने उस सामग्री के पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग को प्रोत्साहित करने में मदद की जो अन्यथा प्रदूषण और कचरे के ढेर को बढ़ाती थी।

डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का बीसवार्षिक समारोह आयोजित

विशाखापत्तनम शहर, विजयानगरम्, श्रीकाकुलम, काकीनाडा, अमलापुरम, राजमुंदरी, अचंतावेमावरम, बोलारम, सिकंदराबाद, कडपा में डी.ई.आई., आंध्र क्षेत्र सत्संग एसोसिएशन के अध्ययन केंद्रों के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के बीस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम का 20 वर्षीय समारोह आयोजित किया गया। 21 जनवरी, 2024 को विशाखापत्तनम दयाल नगर, डी.ई.आई. सूचना केंद्र के तत्वावधान में कुरनूल, प्रोद्दुतुर, विजयवाड़ा और बेंगलुरु ने इस अवसर को हर्षोल्लास और भव्यता के साथ

मनाया। प्रोफेसर वी.वी.जी. शास्त्री, अध्यक्ष आंध्र राधास्वामी सतसंग डी.ई.आई.एसोसिएशन, और आंध्र राधास्वामी एजुकेशन सोसाइटी और क्षेत्रीय सचिव, श्री जी.रमेश बाबू ने समारोह की शुरुआत के प्रतीक के रूप में रिबन काटकर और डी.ई.आई. के संस्थापक, परम पूज्य परम गुरु हुजूर डॉ. एम.बी. लाल साहब की स्वरूप पर माला चढ़ाकर उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई। समारोह की शुरुआत पूजा पाठ और प्रसाद वितरण से हुई। इसके बाद परम पूज्य प्रो. प्रेम सरन सतसंगी साहब (अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति, डी.ई.आई. के लिए थिंक टैंक के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय) के अमृत प्रवचन की ऑडियो रिकॉर्डिंग बजाई गई, जो 2 जून, 2004 में एम.टी.वी. पुरम, तमिलनाडु में पहले दूरस्थ शिक्षा केंद्र के उद्घाटन के समय बजाई गई थी। केंद्र प्रभारी, वी. दक्षिणा मूर्ति ने कार्यवाही का संचालन किया और अन्य सभी केंद्र प्रभारियों, छात्रों और संकाय सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। प्रोफेसर आनंद मोहन, रजिस्ट्रार, डी.ई.आई., और प्रोफेसर वी.बी. गुप्ता, समन्वयक, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, डी.ई.आई. ने वर्चुअल मोड में सभा को संबोधित किया। दोपहर के भोजन के बाद के सत्र में खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और मुख्य अतिथि श्री. ई.ए.एस. शर्मा, सेवानिवृत्त आई.ए.एस. और पूर्व सचिव, वित्त, ऊर्जा और ऊर्जा, भारत सरकार ने केंद्र का निरीक्षण किया और छात्रों से बातचीत की। समारोह के समापन पर छात्रों द्वारा कव्वाली और नाटकों से युक्त एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

जालंधर और मुरार केंद्रों में गणतंत्र दिवस समारोह

डी.ई.आई. के विभिन्न दूरस्थ केंद्रों में 75वां गणतंत्र दिवस पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जालंधर परिसर में, जिला सचिव श्री जसबीर सिंह, केंद्र प्रभारी, श्री बलबीर सिंह, संकाय सदस्यों, छात्रों और संत (सु) परह्यूमन इवॉल्यूशनरी स्कीम में नामांकित बच्चों ने अपने माता–पिता के साथ भाग लिया। भाषण, कविताएँ और नृत्य प्रदर्शन ने इस अवसर को यादगार बनाया। दिन का आनंद बढ़ाने के लिए प्रश्नोत्तरी और खेलों का भी आयोजन किया गया।

सूचना केन्द्र मुरार में भी गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। सतसंग कॉलोनी मुरार में रहने वाले सतसंगी भाई–बहनों और कॉलोनी के बाहर के अन्य लोगों को उत्सव देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर छात्रों ने भाषण, एक्शन गीत और स्व–रचित कविताएँ प्रस्तुत कीं जिनकी सभी ने सराहना की।

डी.ई.आई. केंद्रों में संस्थापक दिवस समारोहः एक विहंगम दृश्य

संस्थान के सम्मानित संस्थापक डॉ. एम.बी. लाल साहब को उनके शुभ जन्मदिन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, 31 जनवरी, 2024 को डी.ई.आई. के सभी दूरस्थ केंद्रों में संस्थापक दिवस मनाया गया। कुछ केंद्रों से प्राप्त रिपोर्टों से समारोहों का अवलोकन किया जा सकता है। डी.ई.आई. सूचना केंद्र लुधियाना ने छात्रों द्वारा तैयार किए गए मॉडल और चार्ट का प्रदर्शन करके इस अवसर का जश्न मनाया। इस कार्यक्रम में कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और आसपास का क्षेत्र जनता के भ्रमण के लिए खुला था। पटना सूचना केंद्र में संस्थापक दिवस धूमधाम से मनाया गया श्री विशिष्ट अतिथि बिहार क्षेत्रीय सतसंग संघ के अध्यक्ष शशि प्रकाश थे। मार्गदर्शकों, सुविधाप्रदाताओं, संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा सूचनात्मक प्रस्तुतियाँ दी गईं। आगंतुकों को मूल्यवर्धन के साथ पेश किए जा रहे कार्यक्रमों और इन पाठ्यक्रमों की संभावनाओं से अवगत कराया गया।

भोपाल केंद्र में, कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना और उनके चरण कमलों में दर्शन और समर्पण के दीप प्रज्ज्वलन के साथ

हुई। स्वागत भाषण केंद्र प्रभारी श्रीमती कोमल कपूर ने दिया। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। आगंतुक प्रदर्शनों की कलात्मक सुंदरता से प्रभावित हुए। इसके बाद प्रेरक मानदंडों जैसे उच्चतम उपस्थिति, पढ़ाई में ईमानदारी, उत्साही शिक्षार्थी और रंगोली प्रतियोगिता पर छात्रों को पुरस्कार वितरण किया गया। जालंधर केंद्र में, जबकि भक्ति संगीत ने वातावरण को श्रद्धा और शांति से सराबोर कर दिया, आगंतुकों ने प्रदर्शन और प्रदर्शनी अनुभाग देखा, जहां केंद्र में गतिविधियों और सीखने से संबंधित प्रदर्शनों के अलावा, राधास्वामी शैक्षिक संस्थान से दयालबाग़ के विकास से संबंधित चित्र भी थे। शैक्षिक संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) और दयालबाग़ में अंतर्राष्ट्रीय कैमलिड्स वर्ष का अवलोकन प्रदर्शित किया गया।

पुणे सेंटर में संस्थापक दिवस को गर्मजोशी और सौहार्द से भरे एक खुशी के अवसर के रूप में मनाया गया। श्री. गुजरात और महाराष्ट्र क्षेत्रीय सतसंग एसोसिएशन के अध्यक्ष पी.एस. मल्होत्रा मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। बच्चों ने अपने जीवंत नृत्य प्रदर्शन से दर्शकों को प्रसन्न किया, माहौल को ऊर्जा और उत्साह से भर दिया। जिला सचिव श्री के चिंतनशील शब्द स्वामी दास ने सभा को और समृद्ध किया। कार्यक्रम का समापन केंद्र प्रभारी श्रीमती विनीता भवनानी द्वारा समुदाय की भावना को रेखांकित करते हुए हार्दिक आभार व्यक्त करने के साथ हुआ। दयालनगर, विशाखापत्तनम केंद्र में, श्री पी. बसंत कुमार, सेवानिवृत्त आई.ए.एस. और आंध्र प्रदेश के सत्य साईं जिले के पूर्व जिला कलेक्टर और मजिस्ट्रेट, संस्थापक दिवस समारोह के मुख्य अतिथि थे। गणमान्य व्यक्तियों के प्रेरक और ज्ञानवर्धक भाषणों के बाद, एक विशाल प्रदर्शनी सह बिक्री का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। स्व–रोजगार उद्यमियों, उपस्थित छात्रों और इंटर्नशिप छात्रों द्वारा बनाए गए उत्पादों को सभी ने बहुत सराहा और अधिकांश उत्पाद तुरंत बिक गए।

इस शुभ अवसर पर, रूड़की के डी.ई.आई. सूचना केंद्र में 'एडुक्वेस्टः नेविगेटिंग द जर्नी टू एजुकेशनल एक्सीलेंस' नामक एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में लगभग नब्बे प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में 30 से अधिक वक्ता शामिल हुए, जिनमें उद्योग विशेषज्ञ, प्रोफेसर, शिक्षक, शोधकर्ता, छात्र और संत (सु) परह्यूमन योजना के बच्चे शामिल थे। ऑटोमोटिव क्षेत्र की उल्लेखनीय हस्तियों, जैसे मिडास मोटर्स (टाटा मोटर्स) से श्री मुनीर आलम, महिंद्रा माईटी ऑटो व्हील्स से श्री ब्रिजेश मिश्रा, शाकुंबरी ऑटोमोबाइल्स (मारुति सुजुकी) से श्री दीपक राठी और ट्रस्ट टोयोटा से श्री विक्रांत तिवारी ने क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी प्रगति में अंतर्दृष्टि साझा की। यह गर्व की बात है कि चारों कंपनियों ने अपने प्री–प्लेसमेंट ऑफर रूड़की सेंटर के छात्रों को दिए हैं। इलेक्ट्रिकल और मोटर वाहन मैकेनिक्स के छात्रों ने भी अपने कौशल और नवाचारों का प्रदर्शन करते हुए अपने कामकाजी मॉडल का प्रदर्शन किया।

एलोरा सेंटर, आगरा में, यह कार्यक्रम छात्रों द्वारा तैयार किए गए प्रभावशाली मॉडल प्रदर्शनों के साथ शुरू हुआ, जिसमें उनकी नवीन भावना और कलात्मक कौशल का प्रदर्शन किया गया। जटिल वास्तुशिल्प मॉडल से लेकर अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी प्रोटोटाइप तक, प्रदर्शन डी.ई.आई. समुदाय के भीतर विकसित विविध प्रतिभाओं को दर्शाते हैं। मौज–मस्ती और उत्साह का स्पर्श जोड़ने के लिए, खेल के स्टॉलों के अलावा, स्वादिष्ट व्यंजनों की पेशकश करने वाले खाद्य स्टॉलों की एक श्रृंखला पूरे आयोजन स्थल पर फैली हुई थी, जो छात्रों और आगंतुकों के लिए एक जीवंत वातावरण प्रदान कर रही थी।

लुधियाना

पटना

भोपाल

पुणे

जालंधर

विशाखापट्टनम (दयालनगर)

रूड़की

एलोरा

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

बसंत 2024 दयालबाग़ में 14 फरवरी को एक विशेष कार्यक्रम के साथ मनाया गया – स्प्रिंगर नेचर द्वारा 'विज्ञान और मानविकी में चेतना अध्ययन' पूर्वी और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक का विमोचन हुआ: जिसके संपादक परम श्रद्धेय प्रो. प्रेम सरन सतसंगी साहब, प्रो. अन्ना मार्गरेटा होरात्शेक, और प्रो. आनंद श्रीवास्तव हैं।

इस अंक में 'परम अंत में आनंद–बसंत' शीर्षक वाला लेख स्पष्ट रूप से संतों के धर्म, विशेष रूप से रा धा/ध: स्व आ मी मत में बसंत के असाधारण महत्व को इंगित करता है। बदलते मौसम प्रतीकों को एक समृद्ध स्रोत प्रदान करते हैं, जिनमें से प्रत्येक आत्मा की यात्रा में आध्यात्मिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि यह अपने मूल दिव्य निवास के कठिन रास्ते को पार करता है। गुरु नानक साहब के बारामासा में फरमाया है, बसंत आनंद का महीना है जब आत्मा पूर्णरूप से भगवान के दर्शन में आनंदित होती है। हालाँकि, यह शुभ मौसम रा धा/ध: स्व आ मी मत के आगमन का एक अभिन्न अंग है। बसंत पंचमी, माघ सुदी 5, शुक्रवार, 15 फरवरी, 1861 को सतसंग के द्वार आम जनता के हृदयों में दयापूर्वक भावनायें खोल देती है। इस प्रकार बसंत कई मायनों में शुरुआत के साथ–साथ अंत का भी प्रतीक है – जन्म के चक्र से मुक्ति, मृत्यु और पुनर्जन्म – आत्मा के लिए तो यह शाश्वत बसंत है।

हम अपने पाठकों को aadeisnewsletter@gmail.com पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं और उसे सुनने के लिए सदैव तत्पर हैं!

परम अंत में आनंद – बसंत

सीमा स्वामी प्यारी संधीर, कला स्नातक (1984 का बैच), डी.ई.आई.

ई ए एल'* शिक्षक (सेवानिवृत्त), अमेरिकन इंटरनेशनल स्कूल, चेन्नई

(*ई ए एल: एक अतिरिक्त भाषा के रूप में अंग्रेजी)

'बसंत' शब्द ही' खुशी और उत्साह जगाता है। सरसों की फसलों के खिलने की प्रकृति की शानदार कला से ऐसा लगता है जैसे प्रकृति बसंत के आगमन की घोषणा करते हुए, नई ऋतु की शुरुआत के वादे पर खुशी मना रही है। और, जहाँ आनंद है, वहां उत्सव है! आंनद स्वरूप लोग उत्साह से पीले रंग के वस्त्र पहनते हैं। एक ही त्यौहार, अलग–अलग क्षेत्रों में अनोखे ढंग से मनाया जाता है। फिर भी, उसी अहमियत के साथ – सर्दी समाप्त हो रही है; बसंत आ रहा है।

हालांकि बसंत मुख्य रूप से एक हिंदू त्योहार है, किन्तु विभिन्न धर्मों के अनुयायियों द्वारा मनाया जाता रहा है और आज भी यह समस्त संसार में मनाया जाता है। पाकिस्तान में यह 'बसंत पतंगबाजी महोत्सव' के रूप में है। दिल्ली स्थित चिश्ती संप्रदाय के सूफी आज भी उन उत्सवों का आनंद लेते हैं जिन्हें 12वीं शताब्दी के सूफी कवि अमीर खुसरो ने अपनाया था। देवी सरस्वती के लिए हिंदुओं द्वारा विशेष पूजा आयोजित की जाती है। इस दिन भगवान शिव, पार्वती और भगवान कृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न की भी पूजा की जाती है। सिख धर्म में गुरु ग्रंथ साहिब के कई *शब्द राग* बसंत में गाए जाते हैं, जो मौसम में बदलाव और बसंत की ताजगी को दर्शाता है।

दयालबाग़ का बसंत अनोखा और खास है। आख़िरकार, 1861 में इसी पवित्र दिन पर, परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने अत्यंत कृपापूर्वक अपार दया व मेहर कर एकमात्र मार्ग के रहस्य को उजागर करके पूरी मानवता पर मेहर की जो जीवों को उनके सच्चे घर, उनके निवास, रा धा/ध: स्व आ मी *धाम* तक वापस ले जाएगा।

बसंत का महत्व केवल जाति, पंथ और सामाजिक–आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी के लिए सतसंग खोलने तक ही

सीमित नहीं है, बल्कि दयालबाग़ (दयालु का उद्यान) को सतसंग के मुख्यालय का जन्म स्थान बनाने तक भी है। 1915 में इसी शुभ दिन पर परम गुरु हुज़ूर साहबजी महाराज ने पवित्र कुएं के पास जो परम पुरुष पूरन धनी, हुज़ूर स्वामीजी महाराज के लिए पानी का स्रोत था, शहतूत का पेड़ लगाया था।

परम पुरुष पुरन धनी हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने अपने बचन (नंबर 136) में बसंत का अर्थ इस प्रकार समझाया है कि:

''जिसने परम अंत में जाकर अपना निवास बना लिया है वह बसंत है और वह वास्तव में अनोखा बसंत है और केवल ऐसे लोगों के लिए है जिन्होंने उस क्षेत्र में चढ़ना और निवास करना है। जो सभी का अंत है, वहां हमेशा बसंत होता है।''

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि न केवल दयालबाग़ के निवासी, बल्कि सतसंग समुदाय के सभी सदस्य बसंत को उसी तरह से मनाते हैं जो दयालबाग़ की जीवन शैली का मूल है – सेवा, सतसंग और आत्म–चिंतन में डूबे हुए। वे मुख्यालय और उनके उपनिवेशों को शानदार तरीकों से सजाने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं, ऊपरी क्षेत्रों में यह कैसा हो सकता है इसका एक छोटा सा प्रतिबिंब इस धरती पर लाने के अपने प्रयास में। सबसे छोटे संत सुपरह्यूमैन से लेकर सबसे बुज़ुर्ग तक हर सदस्य किसी न किसी गतिविधि में डूबा रहता है, चाहे वह सजावट, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आदि हो। इन सारी गतिविधियों के साथ, हम अपने परम पिता को उस उपहार के लिए धन्यवाद देते हैं जो उन्होंने हमें प्रदान किया है। हमेशा और हमेशा के लिए चिरस्थायी आनंद का मार्ग, अंतिम अंत – बस अंत

बसंत

प्रिया सिंह,
बैचः एम.बी.एम. (1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2012);
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डी.ई.आई. चेन्नई सूचना केंद्र

सीतकाल के बाद बसंत पंचमी का त्यौहार सामने आता है,
जो वसंत के मौसम का एक अग्रदूत है, खुशी, उत्साह और गर्मी लाता है।

चारों ओर सब कुछ उज्ज्वल और जीवंत होता है,
एक नया काम शुरू करने के लिए, यह शुभ माना जाता है,
इस त्यौहार पर पीले रंग को विशेष महत्व दिया जाता है,
लोग चमकीले पीले रंग के कपड़े सजाते हैं,
स्वादिष्ट मिठाइयाँ पीली और केसरिया भी पकाते हैं।

इस दिन धार्मिक पूजा की जाती है,
बुद्धि, ज्ञान, समृद्धि के लिए लोग प्रार्थना करते हैं,
फूलों की सजावट, झिलमिलाती रोशनी, चारों ओर सुंदर दृश्य होते हैं,

यह सांसारिक स्तर पर बसंत है,
जहां आत्माएं नश्वर ढांचे में हैं,
उच्च आध्यात्मिक क्षेत्रों में, बसंत उत्सव शुद्ध,
आनंदमय, वर्णन से परे है।

वहाँ आत्माएं नृत्य करती हैं, और झूमती हैं,
इस प्रकार वह वातावरण में मत्रमुग्ध हो जाती हैं,
जैसे ईथर संगीत नोट्स बजते हैं,
चमकदार रोशनी – लाल, पीला, नीला और सफेद,
सब कुछ शुद्ध, दीप्तिमान और चमकीला दिखाई देता है।

जब परम पुरूष अपनी दयालु दृष्टि बरसाते हैं,
आत्माएं एक आनंदमय समाधि में मग्न हो जाती हैं,
वे परम दिव्यता में लीन हो जाती हैं,
यह ट्रिनिटी पूर्व छात्रों में दिव्य बसंत है।

पूर्व छात्रों की बाइट्स....

''दयालबाग़ में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है..''

''.....किसी के जीवन का एक सार्वधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करना। विज्ञान और इंजीनियरिंग की आधुनिक शिक्षा के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता उच्च स्तर की गुणवत्ता और नैतिक मूल्यों द्वारा प्रतिष्ठित है। संपूर्ण रूप से मानव को विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षा प्रणाली में कला, साहित्य, विज्ञान, इंजीनियरिंग, आध्यात्मिकता और धार्मिकता का डी.ई.आई. का अनूठा एकीकरण स्वंय ही अद्भुत और अद्वितीय है। कम मूल्य पर, हमें यहाँ बेहतरीन शिक्षा मिलती है जिसके बाद हम स्वंय को आश्वस्त और आत्मनिर्भर पाते हैं।''

–गुरुसरन सिंह, डिप्लोमा मैकेनिकल इंजीनियरिंग, डी.ई.आई. (बैच 2005); एम.बी.ए (बैच 2018) और एम.टेक (बैच 2022) डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा; वर्तमान में, ए जी एम और प्रमुख– स्ट्रैटेजिक सोर्सिंग स्विच मोबिलिटी ऑटोमोटिव लिमिटेड (अशोक लीलैंड की इलेक्ट्रिक वाहन शाखा)

''डी.ई.आई. में अध्ययन करना विशिष्ट महत्व रखता है और मैं काफी भाग्यशाली रहा हूँ कि मुझे इस अद्वितीय संस्थान से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने का अवसर मिला। ऐसे वातावरण में रहने के दौरान जो धैर्य और विनम्रता के गुण विकसित हुए और एक संपूर्ण व्यक्ति की अवधारणा ने मेरे दृष्टिकोण को इस तरह से आकार देने में मदद की कि मैं अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में खुद को ढालने में सक्षम हो सका। श्रम की गरिमा पर जोर, यहाँ पढ़ने के अनुभव को और भी सुखद बनाता है।"

–अर्पित माथुर, बी.टेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग (बैच 2012–2016); वर्तमान में, प्रबंधक – सेवा संवर्धन, सेवा योजना, यामाहा मोटर इंडिया सेल्स प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

मुख्य संपादक

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक

डॉ. सोना दीक्षित
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी
डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य

डॉ. चारु स्वामी
डॉ. नेहा जैन
डॉ. सौम्या सिन्हा
श्री आर.आर. सिंह
प्रो. प्रवीण सक्सेना
प्रो. वी. स्वामी दास
डॉ. रोहित राजवंशी
डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक

डॉ. नमस्या
डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई.
(डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल

डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री राकेश मेहता

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni
(AADEIs & AAFDEI)

संपादक

प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति

डॉ. सरन कुमार सतसंगी,
प्रो. साहब दास
डॉ.बानी दयाल धीर
श्रीमती शिफाली सत्संगी
श्रीमती अरुणा शर्मा
डॉ.स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. गुरप्यारी भटनागर
डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002
पंजीकृत कार्यालयः
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्क II,
नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस